Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (Third Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC- 106

Paper Title: भारतीय काव्यशास्त्र

Module Name: शब्दशक्तियां -I

Module No : 11

Name of the Presenter: Dr. Ranjita Parab, Asst. Professor.

Transcript:-

- **Notes:-** शब्द शक्तियाँ –

- शब्द का अर्थ-बोध कराने वाली शक्ति को शब्द शक्ति कहते है। शब्द या शब्द समूह में जो अर्थ छिपा होता है,उसे प्रकाशित करने /वाली शक्ति का नाम शब्द शक्तियाँ है।

- शब्द - जो कुछ बोला सुना या पढ़ा जाता है उसे शब्द कहते है।

- साहित्य में तीन प्रकार के शब्द होते है :

- वाचक , लक्षक, और व्यंजक

- वाचक शब्द से वाच्यार्थ, लक्षक शब्दों से लक्ष्यार्थ और व्यंजक शब्दों से व्यंग्यार्थ

- प्रकट होता हैं।

- सार्थक शब्दों के अर्थ को व्यक्त करनेवाली शक्ति को ही शब्दशक्ति कहते है।

शब्द शक्तियाँ तीन प्रकार की होती हैं।

- अभिधा, लक्षणा, व्यंजना
- अभिधा – साक्षात सांकेतिक अर्थ या मुख्य अर्थ का बोध करानेवाली शक्ति को अभिधा कहते है।
- इस शक्ति से शब्दों का प्रचलित, सर्वमान्य, शब्दकोश में उपलब्ध अर्थ व्यक्त होता है।
- अभिधा से व्यक्त होने वाले अर्थ को मुख्यार्थ या वाच्यार्थ कहते है।

वाचक के भेद :

- 1. जातिवाच: इन शब्दों से वस्तु या प्राणी की जाति का बोध होता है। उदा. कुत्ता, फल, गुलाब आदि।
- 2. द्रव्यवाचक : जो शब्द किसी पदार्थ या धातु का बोध कराते है। उदा.

सोना ,पनि, तेल आदि।

- 3. गुणवाचक : जिन शब्दोंसे किसी विशेष गुण का बोध हो। उदा. होशियार,काला, मीठा आदि।
- 4. क्रियावाचक : जिन शब्दोंसे किसी क्रिया का बोध होता है उदा. उठना, रोना, हसना आदि। साहित्य की अगर बात करे तो,कहानी , उपन्यास, कवितओं में ज़्यादातर अभिधा का ही प्रयोग मिलता है। उदा.
- वह तोड़ती पत्थर

  देखा उसे मैंने इलहबाद के पथ पर

- अभिधा के तीन भेद है।
- रूढ़ शब्द :- जिन शब्दों का खंड न हो, सम्पूर्ण शब्दों का एक ही अर्थ प्रकट हो उन्हें रूढ़ शब्द कहते है। उदा. हाथी मेज आदि।

० यौगिक :- अखंड रूप मे इनका जो अर्थ मिलता है वह खंडित रूप में भी मिलता है। उदा. पाठशाला , राजकुमार आदि।

०योगरुढ़ :- जो शब्द यौगिक की प्रक्रिया से बने हो ,किन्तु उनका एक निच्छित अर्थ रूढ़ हो गया हो उन्हें योगरूढ़ कहते है।

गजानन , लंबोदर।

लक्षणा शब्दशक्ति

- मुख्यार्थ बाधित होने पर या लागू न होने पर रूढ़ि या प्रयोजन के कारण शब्दों का जो दूसरा अर्थ व्यक्त करनेवाली जो शक्ति है उसे लक्षणा कहते है।
- राजू गधा है। (यहा गधे का लक्ष्यार्थ मूर्ख से है।)
- लड़का शेर है।
- ढाई बज गए और अब पेट में चूहे दौड़ रहे है।
- लक्षणा के दो प्रकार

1.रूढ़ि लक्षणा

2.प्रयोजन वती लक्षणा

रूढ़ि लक्षणा :जहाँ किसी शब्द के मूल अर्थ को त्यागकर रूढ़ि या परंपरा के कारण उसमें निहित लक्ष्यार्थ को लिया जाता है तो वह रूढ़ि लक्षणा होती है।

पंजाब वीर है। .उदा

लड़का शेर है।

प्रयोजनवाती लक्षणा जहाँ किसी शब्द का नियित अर्थ न लेकर विशेष प्रयोजन या उदेश्य : के कारण उससे संबंधित लक्ष्यार्थ का लिया जाता है, तो उसे प्रयोजनवती लक्षणा कहा जाता है।

वह स्त्री तो गंगा है। .1 .उदा

.2 आँख उठा कर देखा तो सामने हड्डियों का ढाँचा खड़ा था।

.3 वह तो गाय है।

लक्षणा का महत्व कविता में लक्षणा का प्रयोग रमणीयता :, विशेष चमत्कार लता हैं , बोलचाल की भाषा में भी कहावतों मुहावरों के माध्यम से किया जाता हैं ।

शब्द शक्ति – साहित्य में दूसरा स्थान शब्द की शक्तियों का है। क्योंकि ध्वनियों के समूह से शब्द का निर्माण होता है और उससे ध्वनित वाला बोध हमें शब्द के तात्पर्य से अवगत कराता है। अतः शब्द बोधक है और अर्थ बोध्य है। लेकिन भाषा में यह साहित्य में शब्द के अंदर अनेक अर्थ सन्निहित रहते हैं। शब्द का अर्थ देशकाल परिस्थिति के साथ-साथ वक्ता की प्रस्तुति श्रोता की स्थिति और संदर्भों वह प्रसंगों की अवधारणा से भी संबंधित रहती है काव्यशास्त्रीय ने शब्द शक्तियों का निम्न प्रकार निरूपण किया है।

शब्द शक्ति का नाम	शब्द	अर्थ
अभिधा	वाचक	वाच्य (अभिधेय) मूल प्रातिपदिक अर्थ
लक्षणा	लक्षक	लक्ष्य (रूठना है या प्रयोजन के आधार ग्राहन अर्थ)
व्यंजना	व्यंजना	व्यंजना (शब्द और अर्थ से व्यंजित होने वाला अर्थ)

अभिधा

शब्द के साथ संयुक्त लोक प्रसिद्ध अर्थ का बोध कराने वाले शब्द की प्रवृत्ति या शक्ति को अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं। जैसे ‘ कमल ‘ कहने पर एक फूल विशेष का ‘ चंद्रमा ‘ कहने पर एक आकाश में चमकने वाले ग्रह पिंड का बिंब मन में उपस्थित हो जाता है।

लक्षणा

जब शब्द का मुख्य अर्थ बाधित होकर रूढि अथवा प्रयोजन विशेष के कारण मुख्यार्थ से संबंधित किसी अन्य गौण अर्थ की प्रतीति होने लगती है। वहां लक्षणा शब्द शक्ति होती है। जैसे यदि अमूक नाम से व्यक्ति को हम गाय , गधा, बैल , हाथी या शेर की संज्ञा से पुकारते

हैं या कहते हैं तो वहां अमुक पशु नाम के स्थान पर उस पशु के लक्षणों का अर्थात पशुत्व का बोध उस अर्थ में सब प्रयोजन होने लगता है। यही अर्थ के साथ प्रतीत होने वाली लाक्षणिकता है लक्षणा शब्द शक्ति है।